दिनांक :- 23-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फारूक आजम (अतिथी शिक्षक)

स्नातक प्रथम खंड (अनुशांगिक)

विषय प्रतिष्ठा इतिहास (कला)

सेमेस्टर :- चार

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- सिंधु घाटी की सभ्यता

नगर-निर्माण-योजना (Town-Planning)

हड़प्पा मोहनजोदड़ो तथा दूसरे स्थलों में जिस तरह के नगर विन्यास मिला है उससे स्पष्ट होता है कि विधिवत नक्शा बना कर भवन का निर्माण किया जाता है। खुदाई में भग्न भवनों के अवशेष मिले हैं। प्रशस्त राजपथ, पौड़ी गलियाँ, सफाई का उत्तम प्रबंध, गन्दे पानी बाहर निकालने के लिए लम्बी

चौड़ी नालियों की व्यवस्था। सार्वजनिक स्नानागार, कुआँ मकानों में हवादार खिड़कियों का प्रबंध आदि इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं कि नगरों का निर्माण और विस्तार वास्तु विशारदों की निश्चित योजना एवं श्रेष्ठ व्यवस्था के आधार पर होता था।

सिंधु-सभ्यता से सम्बंधित स्थलों के उत्खनन से दो स्तरीय नगरों के निर्माण के प्रमाण मिले हैं। दुर्ग और निचला शहर। दुर्ग में शासक का निवास स्थान था। निचले शहर में आवासीय भवन के अवशेष हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, कालीबंगा लोथल, सुतकोटड़ा आदि जगहों में गढ़ी तथा निचले शहरों के प्रमाण उपलब्ध हुए हैं। दोनों नगरों के बीच आवागमन नियंत्रित रहता था। कालीबंगा में दोनों नगरों के बीच आवागमन के लिए दो मार्ग मिले हैं। इसी प्रकार मोहनजोदड़ो में दोनों नगरों के बीच एक नहर थी जिसे पार कर दुर्ग में प्रवेश किया जा सकता था।

गढ़ियाँ ऊँचे चबूतरो पर बनायी जाती थी। गढ़ियों की सुरक्षा का भी प्रबंध रहता था। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो मे गढ़ी की दीवारो पर बुर्ज बने मिले है जिनमे दुर्ग के रक्षक रहते थे। गढ़ो के ऊपर जाने के लिए सीढ़िया भी बनाई जाती थी। मोहनजोदड़ो और कालीबंगा मे निचले शहर की घेराबन्दी की गयी थी।

मकान:- खुदाई मे छोटे-बड़े मकान मिले है। मकानो के निर्माण में सादगी और उपयोगिता पर अधिक ध्यान दिया जाता था। सिंधु घाटी के नागरिक भवनो के निर्माण मे सजावट और बाह्य आडम्बर के विशेष प्रेमी नही थे। उनके भवनो मे न अलंकरण ही दिखता है और न विविधता ही। मकानो के अवशेष से स्पष्ट हो जाता है कि भवन निर्माण योजनाबद्ध तरीके से होता था। सड़को के दोनो ओर कतारो के रूप मकान थे। जिस समय मिस्र के निवासी पक्की ईंटो से अनभिज्ञ थे और मेसोपोटामिया मे पकाई हुई ईंटो का प्रयोग कम होता था।

उस समय सिंधु घाटी सभ्यता पक्की ईंटों का प्रयोग बड़े पैमाने पर करते थे। ईंटें छोटी बड़ी दोनों प्रकार की होती थीं। नगर की रक्षा के लिए उसके चारों ओर प्राचीर खड़ा किया जाता था। मकान कई मंजिलों के होते थे जिनमें ऊपर जाने की सीढ़ियाँ होती थीं। प्रत्येक घर में आँगन, पाकशाला स्नानगृह, शौचगृह, नालियाँ तथा कुएँ रहते थे। मकान में हवा और रोशनी के लिए झरोखे बनवाये जाते थे। दरवाजे लकड़ी के बनाये जाते थे। मकानों में लकड़ी के खम्भों का व्यवहार होता था। खिड़कियाँ घर के आँगन की ओर खुलती थीं। हड़प्पा सभ्यता में ठोस मेहराब का प्रयोग मिलता है। मोहनजोदड़ो के निचले नगर के कुछ मकानों में स्नानघर बनाये गये थे। इनकी तुलना पश्चिमी जगत के शौचालयों से की जा सकती है। इन्हें कुछ मकानों में ढलुआ बनाया गया था। कहीं-कहीं इनमें

सीढ़ीदार नाली की व्यवस्था की गयी थी जो बिखर सीढ़ी कर सड़क की नाली से मिलती थी।

हड़प्पा और मोहनजोदड़ो में दो प्रकार के मकान मिले हैं। उनसे अनुमान लगाया जाता है कि बड़े मकानों में अमीर रहते थे छोटे मकान समाज के गरीबो के थे। कच्ची ईंटों से छोटे-छोटे घर बनते थे। प्रत्येक घर में एक आँगन और दो कमरे होते थे। ऐसे मकान 56 फीट x 30 फीट है। अभिजातवर्ग के मकान दुमंजिले होते थे। ऐसे मकानों की नीवें अधिक गहरी और दीवार अधिक चौड़ी होती थी। उनकी छतें लकड़ी तथा मिट्टी से पाटी जाती थी। दीवारों पर चूने और मिट्टी से पलस्तर किये जाते थे। मकान के निचले भाग में दरबानों और नौकरों के लिए अलग कमरे होते थे। मकान की ऊपरी मंजिल पर जाने के लिए सीढ़ियाँ बनायी जाती थी। मजदूरों के मुहल्ले: कुछ ऐसे मकान भी मिले हैं जो सम्भवतः मजदूरों के मुहल्ले थे। मोहनजोदड़ो में ऐसे 16 मकान मिले हैं।

इनमें प्रत्येक 20फीट x 12फीट है। हड़प्पा में इस तरह के दो कमरेवाले 15 मकान मिले हैं। इन इलाकों में ऐसे मजदूर रहते थे जो सम्भवतः गुलामों का काम करते थे। चन्हुदड़ो में भी मजदूरों की बस्ती या कारखाने का प्रमाण मिला है।

सड़क :- सड़कों का निर्माण भी एक निश्चित योजनानुसार होता था। सड़के उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम जाती थी। सबसे बड़ी सड़क की चौड़ाई 30फीट थी। सड़के एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं और नगर को आयता कार खण्डों में विभाजित करती थी। लोथल, कालीबंगा आदि नगरों में यह बात दिखाई पड़ती है। सड़कों का सम्बंध गलियों पत्थर के टुकड़ों से बनी। गलियाँ भी 3 से 7 फीट तक चौड़ी होती थी। नालियों की सफाई व्यवस्था थी।

नालियों की व्यवस्था : घर और नगर साफ करने के लिए नालियों की ऐसी सुन्दर व्यवस्था सिंधुघाटी में थी।

बैसी क्रीत की राजधानी 'नौसस' को छोड़कर किसी देश मे नही थी। ये नालियाँ इस बात की साक्षी है कि सिंधु-प्रदेश के के लोग सफाई के प्रति अधिक सजग थे। नालियाँ अठराह इंच तक गहरी होती थी। प्रत्येक घर की नाली का सम्बंध सड़क की नाली से था जो मकान का गन्दा पानी निकालती थी। बीच-बीच मे पानी रोकने के लिए छोटी खाईया भी थी। वर्षा का पानी बाहर निकालने के लिए बड़ी-बड़ी नालियाँ थी। कम चौड़ी नालियाँ पक्की ईटो से और अधिक चौड़ी नालियाँ पत्थर के टुकड़ो से बनी और ढकी होती थी। घर के कमरो रसोईघर, स्नानागार और शौचगृह की निकास-नालियाँ एक बड़ी नाली मे मिलती थी और विभिन्न घरो से निकली ये बड़ी नालियाँ एक बड़ी सार्वजनिक नाली मे मिलती थी। नर मोखा (मेनहोल) के बड़ी-बड़ी ईटो से ढका जाता था। नालियों को ढकने मे तोड़ा मेहराब का भी प्रयोग मिलता है।

Scanned with CamScanner